ईश्वरीय संदेश

सम्पूर्ण सृष्टि में, सम्पूर्ण पहलुओं से मनुष्यों ने भौतिक जगत में अहम तरक्की की है। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से प्रकृति के पाँचों तत्वों का विश्लेषण कर, अपने भौतिक जीवन को सुविधाजनक बनाया है; परन्तु क्या अपनी अनंत भौतिक इच्छाओं को पूर्ण करने की कोशिश को ही जीवन कहा जाता है? क्या इसे ही श्रेष्ठ मनुष्य योनि की प्रगति कहेंगे? इच्छाओं को तृप्त करने के इन प्रयासों में, हमारा उत्थान हुआ या पतन? "नर चाहत है कुछ और, होवत है कुछ और", वास्तव में सुख-शान्ति प्राप्त करने के लिए मनुष्यों ने जो-2 मार्ग अपनाए, वही उनके पतन के मूल कारण हैं। खास कलियुग अंत में अनेक धर्म और उनकी विभिन्नता के कारण लोग एक-दूसरे से घृणा कर, एक-दूसरे के हत्यारे बन पड़ते हैं; परन्तु सत्य बात तो यह है कि सत्य धर्म के वास्तविक अर्थ को न जानने के कारण अधर्म बढ़ता जा रहा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार- यही दुःख के मूल हैं। पाँच विकार आते ही हैं देह समझने से। इनको नष्ट करने का मूल मंत्र भगवान आकर बताते हैं कि अपने को ज्योतिबिंदु आत्मा समझो। आज मनुष्य स्व के धर्म को भूल परध र्म में लग गया है। गीता में कहा है- "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥" 3/35 स्वधर्म में टिकना श्रेष्ठ है। परधर्म (हिन्दू, मुस्लिम, क्रिश्चियन आदि) अर्थात् देह के धर्म अति खतरनाक (भेद-भाव उत्पन्न करने वाले) हैं। आने वाली जो मारामारी की दुनियाँ है, जहाँ अभी भी टेन्शन लगातार बढ़ता चला जा रहा है, उस दुनिया के लिए आत्मा के धर्म में टिकने का अभ्यास पहले से पक्का करना है। इससे अखंड शान्ति मिलेगी , अखंड विश्वास पैदा होगा, विलपावर आएगी, स्थिति-परिस्थिति-समस्याओं से मुकाबला करने की ताकत आएगी।

History Repeats Itself (इतिहास स्वयं को दोहराता है) के तथ्यानुसार 5000 वर्ष पूर्व का महाभारी महाभारत गृह-युद्ध का समय दुबारा आ चुका है। जहाँ एक ओर पूर्वी देशों में घरेलू गृह-युद्ध भड़क रहे हैं और जहाँ पश्चिमी देशों ने अपनी बुद्धि के बल से एटम बम जैसी विनाशकारी सामग्री का निर्माण कर लिया है। वहीं दूसरी ओर अपने वचनानुसार, अधर्म को मिटाने और सत्य धर्म की स्थापना करने (धर्म संस्थापनार्थाय। गीता 4/7) निराकार भगवान शिव का आगमन हो चुका है।

"गुप्त रूप में सतयुग रचने आए शिव भगवान। अब तो जाग-2 इंसान"

गीता अनुसार "मानुषीम् तनुमाश्रितम" मानव शरीर का आधार लेकर भगवान शिव प्रवेश करते हैं। तो किसी मानव शरीर में प्रवेश कर गुप्त रूप से वह अपना कार्य कर रहे हैं। अर्थात भगवान एकव्यापी है, सर्वव्यापी नहीं। भगवान के एकव्यापी स्वरूप को जानने, समझने और समझकर उनके बताए रास्ते पर चलने से ही शान्ति और सुख के हम अधिकारी बनते हैं। अब यह दोजख, हेल, नारकीय कलियुग की आसुरी दुनिया खत्म होकर नई जन्नत, पैराडाइज़, सतयुगी दुनिया आ रही है, 'वसुधैव कुटुंबकम' की स्थापना होने जा रही है। जो गायन हैं- "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया। सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भागभवेत।" सभी सुखी रहें, सभी निरोगी रहें, सभी का कल्याण हो, सभी के दुख दूर हो जाएँ यही भगवान चाहते हैं। यह तभी संभव है जब सभी प्रकार की पराधीनता से निजात मिल जाए, न मन का बंधन हो और न किसी व्यक्ति का। इसके लिए ही भगवान आकर सच्चा गीता ज्ञान दे रहे हैं। दुनियावी गीता की 108 से भी अधिक टीकाएँ बन चुकी हैं, इतना अध्ययन किया जा रहा है; परंतु फिर भी हिन्दू धर्म का उत्थान नहीं हो पाया, हिन्दू धर्म के अनुयायी ही जास्ती धर्म परिवर्तन कर रहें हैं। क्योंकि उस गीता ज्ञान के सही अर्थों को न समझने के कारण उसे मात्र हिन्दू धर्म से जोड़ दिया है; परंतु यह गीता जिसके ज्ञान का लोहा सभी धर्म वालों ने माना है, वह किसी एक धर्म विशेष नहीं, अपितु समूचे जन साधारण से जुड़ी हुई है। उस गीता ज्ञान की सही व्याख्या भगवान आकर दे रहे हैं। वास्तव में यही गीता ज्ञान में सहज राजयोग की शिक्षा दी गई है, इसलिए गीता में आया है-

''राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।'' 9/2 यह राजाओं की राजविद्या है, उत्तम राजाई का रहस्य है, सर्वोत्तम ज्ञान है।

तात्पर्य यह है कि मनुष्यात्माएँ परमपिता+परमात्मा शिव के साकार में निराकार रूप को पहचान कर ही भगवान से योग लगाकर नर से नारायण जैसा बन सकती है। यही गीता में राजविद्या, राजयोग का उपदेश है।

यह राजयोग राजा बनाने वाला है। योगबल अर्थात् भगवान की याद से ही राजाई प्राप्त की जा सकती है। हिटलर, मुसोलिनी, नेपोलियन, इन्होंने हिसा के आधार पर सारी दुनिया में राजाई स्थापन करनी चाही ; लेकिन ये लॉ नहीं है कि कोई हिसक बनकर सारी दुनिया का दिल जीत सके। ये

सहज ज्ञान और सहज राजयोग है, जिसके आधार पर सारी दुनिया के दिल को जीता जा सकता है, विश्व की बादशाही प्राप्त की जा सकती है। यही अशान्त मन को शान्त करने का एकमेव रास्ता है, जो स्वयं भगवान एक व्यापक होकर समझाते हैं।

ॐ शांति

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya